International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

भारतीय विदेश नीति के समक्ष चुनौतियाँ और उनके समाधान

डॉ0 अमित मेहता
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान विभाग), किशनलाल पब्लिक कॉलेज, रेवाडी
मो0 नं0 9899374716
Email: amitmehta0301@gmail.com

शोध सारः– वर्तमान समय भूमण्डलीकरण का है जहाँ प्रत्येक राष्ट्र भौगोलिक दूरियों को पीछे छोड़ते हुए इतने समीप आ गए हैं कि प्रत्येक राष्ट्र एक–दूसरे को लगभग सभी प्रकार से प्रभावित करते हैं। इन्हीं प्रभावों को कम करने तथा अपने देश के राष्ट्रीय हितों को पूरा करने के लिए सभी देश अपनी विदेश नीति का निर्माण करते हैं। विदेश नीति के बारे में बताते हुए हेनरी किसिंजर ने कहा है कि, ''जो देश अपनी विदेश नीति में नैतिक पूर्णता की माँग करता है, वह न तो पूर्णता प्राप्त कर सकता है और न ही सुरक्षा''।

मुख्य शब्दः– भूमण्डलीकरण, भू–राजनीति, विदेश नीति, राष्ट्रीय हित।

प्रस्तावना

भारत विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों में से एक है और आज वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा सुरक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा, क्षेत्रीय शांति बनाए रखना, आर्थिक विकास को बढ़ावा देना तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी प्रभावशाली उपस्थिति स्थापित करना रहा है। भारत ने गुटनिरपेक्षता, पंचशील, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और रणनीतिक स्वायत्तता जैसे सिद्धांतों को अपनाकर अपनी विदेश नीति को दिशा दी है।

21वीं सदी में वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति, बदलते शक्ति–संतुलन, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन तथा भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के कारण अंतरराष्ट्रीय संबंध अत्यंत जटिल हो गए हैं। ऐसी स्थिति में भारतीय विदेश नीति के सामने अनेक चुनौतियाँ उभरकर आई हैं। इन चुनौतियों का प्रभाव केवल भारत की सुरक्षा पर ही नहीं, बल्कि उसके आर्थिक, राजनीतिक और रणनीतिक हितों पर भी पड़ता है। इसलिए इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान आवश्यक है।

भारतीय विदेश नीति के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

1. चीन का बढ़ता प्रभाव

भारत के लिए चीन सबसे बड़ी रणनीतिक चुनौतियों में से एक है। दोनों देशों के बीच लगभग 3,488 किलोमीटर लंबी सीमा है, जिस पर कई क्षेत्रों में विवाद बना हुआ है। विशेष रूप से लद्दाख, अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश से संबंधित विवाद समय–समय पर तनाव उत्पन्न करते हैं।

चीन की विस्तारवादी नीतियाँ, हिंद महासागर क्षेत्र में उसकी बढ़ती गतिविधियाँ और दक्षिण एशिया के देशों में उसका आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभाव भारत के लिए चिंता

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

का विषय है। चीन की ''बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)'' तथा पाकिस्तान के साथ उसका घनिष्ठ सहयोग भारत की सुरक्षा चुनौतियों को बढ़ाता है।

समाधान

- सीमा क्षेत्रों में आधारभूत संरचना का विकास किया जाए।
- सैन्य क्षमता और आधुनिक तकनीकों को मजबूत बनाया जाए।
- इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ाया जाए।
- जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी को मजबूत किया जाए।
- कूटनीतिक वार्ताओं के माध्यम से सीमा विवादों के शांतिपूर्ण समाधान का प्रयास किया जाए।

2. पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद

भारत की विदेश नीति के सामने पाकिस्तान द्वारा समर्थित आतंकवाद एक गंभीर चुनौती है। जम्मू–कश्मीर में सीमा पार आतंकवाद, घुसपैठ और आतंकी गतिविधियाँ लंबे समय से भारत की सुरक्षा को प्रभावित कर रही हैं।

पाकिस्तान कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत के खिलाफ दुष्प्रचार भी करता है, जिससे भारत की विदेश नीति को अतिरिक्त चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

समाधान

- अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद के विरुद्ध वैश्विक समर्थन प्राप्त किया जाए।
- सीमा सुरक्षा को और अधिक मजबूत बनाया जाए।
- आतंकवाद विरोधी सहयोग के लिए अन्य देशों के साथ साझेदारी बढ़ाई जाए।
- पाकिस्तान पर कूटनीतिक दबाव बनाए रखा जाए।
- आर्थिक और तकनीकी माध्यमों से आतंकवाद के वित्तपोषण को रोका जाए।

3. पड़ोसी देशों के साथ संबंध

भारत की विदेश नीति में पड़ोसी देशों का विशेष महत्व है। नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश, मालदीव, म्यांमार और भूटान के साथ अच्छे संबंध भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा और विकास के लिए आवश्यक हैं। हालांकि, कई बार राजनीतिक अस्थिरता, सीमा विवाद और बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो जाता है।

चीन का इन देशों में बढ़ता प्रभाव भारत की ''पड़ोसी पहले'' नीति के लिए चुनौती बन रहा है।

समाधान

- पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी सहयोग बढ़ाया जाए।
- क्षेत्रीय संगठनों के माध्यम से सहयोग को प्रोत्साहित किया जाए।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

- विकास परियोजनाओं में निवेश बढ़ाया जाए।
- जनता–से–जनता संबंधों को मजबूत किया जाए।
- आपदा प्रबंधन और स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग बढ़ाया जाए।

4. हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियाँ

हिंद महासागर भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत का अधिकांश व्यापार इसी मार्ग से होता है। समुद्री डकैती, तस्करी, आतंकवाद और विदेशी शक्तियों की बढ़ती सैन्य उपस्थिति भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए चुनौती हैं।

चीन द्वारा हिंद महासागर में बंदरगाहों का विकास और नौसैनिक गतिविधियों का विस्तार भारत के लिए रणनीतिक चिंता का विषय है।

समाधान

- भारतीय नौसेना को और अधिक आधुनिक बनाया जाए।
- समुद्री निगरानी प्रणाली को मजबूत किया जाए।
- हिंद महासागर के देशों के साथ सुरक्षा सहयोग बढ़ाया जाए।
- समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए।
- ''सागर'' (मबनतपजल ंदक ळतवूजी वित ।सस पद जीम त्महपवद) नीति को प्रभावी रूप से लागू किया जाए।

5. ऊर्जा सुरक्षा

भारत विश्व के सबसे बड़े ऊर्जा उपभोक्ताओं में से एक है। देश अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए बड़े पैमाने पर तेल और गैस आयात करता है। पश्चिम एशिया में राजनीतिक अस्थिरता और अंतरराष्ट्रीय संघर्ष ऊर्जा आपूर्ति को प्रभावित कर सकते हैं।

ऊर्जा सुरक्षा की कमी भारत की आर्थिक प्रगति को प्रभावित कर सकती है।

समाधान

- ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाई जाए।
- नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा दिया जाए।
- रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार बढ़ाए जाएँ।
- ऊर्जा उत्पादक देशों के साथ दीर्घकालिक समझौते किए जाएँ।
- सौर और पवन ऊर्जा में निवेश बढ़ाया जाए।

6. वैश्विक शक्ति संतुलन में परिवर्तन

वर्तमान समय में विश्व व्यवस्था बहुध्रुवीय (Multipolar) होती जा रही है। अमेरिका, चीन, रूस और यूरोपीय देशों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा का प्रभाव भारत पर भी पड़ता है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

भारत को विभिन्न शक्तिशाली देशों के साथ संबंध बनाए रखते हुए अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करनी होती है। रूस–यूक्रेन संघर्ष जैसे मुद्दों ने भारत के लिए संतुलन बनाना और अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है।

समाधान

- रणनीतिक स्वायत्तता की नीति को बनाए रखा जाए।
- सभी प्रमुख शक्तियों के साथ संतुलित संबंध विकसित किए जाएँ।
- बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय भूमिका निभाई जाए।
- राष्ट्रीय हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।
- आर्थिक और रक्षा सहयोग के नए अवसर खोजे जाएँ।

7. जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय कूटनीति

जलवायु परिवर्तन आज वैश्विक स्तर की गंभीर समस्या बन चुका है। बढ़ते तापमान, प्राकृतिक आपदाएँ और पर्यावरणीय संकट विकासशील देशों के लिए बड़ी चुनौती हैं। भारत को विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना पड़ता है। अंतरराष्ट्रीय जलवायु समझौतों में भारत पर उत्सर्जन कम करने का दबाव भी रहता है।

समाधान

- हरित ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा दिया जाए।
- अंतरराष्ट्रीय जलवायु मंचों पर विकासशील देशों के हितों की रक्षा की जाए।
- सतत विकास की नीतियों को अपनाया जाए।
- पर्यावरण संरक्षण हेतु वैश्विक सहयोग बढ़ाया जाए।
- जलवायु वित्त और तकनीकी सहायता प्राप्त करने के प्रयास किए जाएँ।

8. साइबर सुरक्षा और तकनीकी चुनौतियाँ

डिजिटल युग में साइबर हमले, डेटा चोरी और तकनीकी जासूसी नई चुनौतियों के रूप में सामने आए हैं। महत्वपूर्ण सरकारी संस्थान, बैंकिंग प्रणाली और रक्षा प्रतिष्ठान साइबर हमलों के निशाने पर रहते हैं।

विदेशी तकनीकों पर अत्यधिक निर्भरता भी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जोखिम पैदा कर सकती है।

समाधान

- साइबर सुरक्षा ढाँचे को मजबूत किया जाए।
- स्वदेशी तकनीकी विकास को प्रोत्साहित किया जाए।
- साइबर अपराधों के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाया जाए।
- डिजिटल अवसंरचना को सुरक्षित बनाया जाए।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उन्नत तकनीकों में निवेश बढ़ाया जाए।

9. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता

भारत विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाले देशों में से एक है और वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके बावजूद उसे अभी तक संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता प्राप्त नहीं हुई है।

यह भारत की वैश्विक भूमिका और प्रभाव को सीमित करता है।

समाधान

- संयुक्त राष्ट्र सुधारों की मांग को मजबूत किया जाए।
- ळ.4 देशों के साथ सहयोग बढ़ाया जाए।
- विकासशील देशों का समर्थन प्राप्त किया जाए।
- अंतरराष्ट्रीय शांति अभियानों में सक्रिय योगदान जारी रखा जाए।
- वैश्विक शासन संस्थाओं में अपनी भूमिका बढ़ाई जाए।

10. आर्थिक कूटनीति की चुनौतियाँ

वैश्विक प्रतिस्पर्धा, व्यापार युद्ध, संरक्षणवाद और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधा भारत की आर्थिक कूटनीति के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न करते हैं।

भारत को विदेशी निवेश आकर्षित करने, निर्यात बढ़ाने और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने की आवश्यकता है।

समाधान

- मुक्त व्यापार समझौतों को बढ़ावा दिया जाए।
- विदेशी निवेश के लिए अनुकूल वातावरण बनाया जाए।
- निर्यातोन्मुखी उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाए।
- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भारत की भागीदारी बढ़ाई जाए।
- आर्थिक सुधारों को निरंतर आगे बढ़ाया जाए।

निष्कर्ष

भारतीय विदेश नीति आज अनेक जटिल और बहुआयामी चुनौतियों का सामना कर रही है। चीन का बढ़ता प्रभाव, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद, पड़ोसी देशों के साथ संबंध, ऊर्जा सुरक्षा, साइबर खतरे, जलवायु परिवर्तन और बदलता वैश्विक शक्ति संतुलन जैसी चुनौतियाँ भारत की विदेश नीति को निरंतर प्रभावित कर रही हैं। साथ ही, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता प्राप्त करना तथा आर्थिक कूटनीति को सशक्त बनाना भी महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं।

इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए भारत को अपनी कूटनीतिक क्षमता, सैन्य शक्ति, आर्थिक सामर्थ्य और तकनीकी विकास को निरंतर मजबूत करना होगा।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

''रणनीतिक स्वायत्तता'', ''पड़ोसी पहले'', ''एक्ट ईस्ट'', ''इंडो–पैसिफिक सहयोग'' तथा बहुपक्षीय कूटनीति जैसी नीतियाँ भारत को वैश्विक मंच पर और अधिक प्रभावशाली बना सकती हैं।

अंततः, एक सशक्त, संतुलित और दूरदर्शी विदेश नीति ही भारत को 21वीं सदी में वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. दीक्षित, जे.एन., भारतीय विदेश नीति, दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, 2018
2. सीकरी, राजीव, भारत की विदेश नीति : चुनौती और रणनीति दिल्ली, सेज भाग 2017
3. फाडिया, डॉ.,बी.एल., अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2017
4. पंत, पुष्पेश, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, 2014
5. मिश्रा, राजेश, भारतीय विदेश नीति : भूमण्डलीकरण के दौर में, ओरियंट ब्लैकस्वान पब्लिकेशन, 2021